



सुगंध

प्रथम दशक
संस्करण
2022



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय (चेन्नै) का कार्यालय



कार्यालय प्रधानों द्वारा 'सुगंध' पत्रिका के नवम अंक का विमोचन



2020-21 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सीएबी स्कंध को शील्ड प्रदान किया गया



**श्री एस. वासुदेवन/ निदेशक द्वारा हिन्दी पखवाडे के दौरान
धन्यवाद प्रस्ताव**



हिन्दी दिवस कार्यक्रम में श्रोतागण

मुखपृष्ठ में



चेन्नै में आयोजित 44 वें शतरंज ओलिम्पियाड का प्रतीक चिन्ह "तम्बी"

सुगंध

प्रधान लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै का कार्यालय
वार्षिक गृह पत्रिका

सुगंध परिवार

संरक्षक

श्रीमती पी माधवी

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

मार्गदर्शक

श्री एस विजय / निदेशक (सी एस /जीएसटी) ।

श्री एस गणेशन / उप निदेशक (प्रशासन एवं सीई)

श्री के.वेणुगोपाल / उप निदेशक (डी टी)- ।

परामर्शदाता

श्री टी के रामकुमार / वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

(प्रशासन)

संपादक मंडल

डॉ एस सुधावल्ली, हिन्दी अधिकारी

सुश्री विजयेता साव गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल साव, कनिष्ठ अनुवादक

संदेश



पी. माधवी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

आजादी के अमृत महोत्सव की इस शुभ घड़ी में, हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “सुगन्ध” का दसवाँ अंक आपको समर्पित करने में अत्यंत हर्ष का अनुभव करती हूँ। यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस पत्रिका में, हमारे कार्यालय के पदधारियों ने हिन्दी भाषा के प्रति अपनी अभिरुचि को दर्शाया है। आशा है कि हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं से ओत-प्रोत यह अंक, हमारे पदधारियों की साहित्यिक रुचि एवं संवैधानिक दायित्वों को बखूबी दर्शाने में सफल रहेगा।

इस पत्रिका के प्रकाशन में, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एवं संपादक मंडल को, मैं अपनी शुभकामनाएं देती हूँ।

माधवी

संदेश



एस. गणेशन/ उप निदेशक
प्रशासन एवं सी ई

हिन्दी दिवस 2022 के अवसर पर हमारे कार्यालय द्वारा अपनी वार्षिक ई-पुस्तक "सुगंध" हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करने से मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

यह पुस्तक प्रवीणता और अनुभव का नया क्षितिज पेश करके विभाग के बौद्धिक क्षमता निर्माण के लक्ष्य को साकार करती है।

पुस्तक को उसके वर्तमान स्वरूप में लाने के लिए काफी प्रयास किए गए हैं और जिन अधिकारियों/ कर्मचारियों ने योगदान दिया है, उनके प्रयास सराहनीय हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि वर्तमान अंक पाठकों के लिए प्रसन्नता की अनुभूति देगा।

गणेशन

संदेश



एस. विजय/निदेशक
सी एस/जीएसटी ।

हमारे स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष में, मैं हिंदी दिवस समारोह के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। सुगंध पत्रिका के 10 वें संस्करण के विमोचन से मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

मैं उन सभी को बधाई देता हूँ जिन्होंने हिंदी दिवस में भाग लिया और पत्रिका के लिए योगदान दिया।

विजय. ए

संदेश



कि. वेणुगोपाल
उप निदेशक/ डी टी-।

मुझे इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिन्दी की पत्रिका "सुगंध" के दसवें अंक के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के साथ-साथ, अधिकारियों/ कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य करने हेतु अधिक उत्साह बढ़ाने में सफल होगी।

इस पत्रिका में योगदान देने वाले पदधारियों एवं संपादक मंडल को मेरी बधाइयों।

कि. वेणुगोपाल

संदेश



टी.के.रामकुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'सुगंध' के प्रथम दशक संस्करण को प्रकाशित करना, हमारे लिए अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है। हमारे कार्यालय के पदधारियों द्वारा अभिव्यक्त लेख, कविता, कहानी एवं अन्य रचनाएँ राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रति अपनी निष्ठा को दर्शाती हैं।

पत्रिका में अपना योगदान देने वाले सभी पदधारियों और संपादक मंडल को मेरी शुभकामनाएँ।

टी.के.रामकुमार

संपादकीय

"हिन्दी दिवस" की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ "सुगंध" के प्रथम दशक अंक प्रेषित करते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

भाषा में एकता स्थापित करने की अद्भुत क्षमता होती है। भारत में अनेक भाषाओं के प्रचलन के होते हुए भी, हिन्दी भाषा का एक अलग महत्व है। हिन्दी भाषा सीधी, सरल, सीखने-सिखाने में आसान और साहित्य की दृष्टि से भी समृद्ध है। एक राष्ट्र के स्वरूप एवं गरिमा को प्रतिपादित करने वाली चेतना के रूप में यह भाषा है। समूचे राष्ट्र की भावधारा को व्यक्त करने वाली भाषा के रूप में हिन्दी भाषा की पहचान की गई है।

जहाँ आजादी की "अमृत महोत्सव" के प्रति देश बढ़ रही है, उसी क्रम में लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि भी बढ़ती जा रही है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है यह अंक। इस प्रकार की गृह-पत्रिकाएं कार्यालय में सकारात्मक माहौल पैदा करती हैं एवं कार्यालय में कार्यरत पदधारियों की साहित्यिक प्रतिभा को सामने लाने में भी सहायक है।

भारत एक ऐसा बहु-भाषी राष्ट्र है, जहाँ समृद्ध संस्कृति की विशाल परम्परा है, जो इस पत्रिका में समाविष्ट विभिन्न विधाओं से आभास होता है। गैर हिन्दी राज्यों में हिन्दी को बढ़ावा देने के विशेष प्रयास से प्रति वर्ष यह पत्रिका निकाली जाती है।

आशा है कि पिछले संस्करणों की तरह, इस बार भी "सुगंध" पत्रिका ज्ञान, प्रेरणा, नैतिक, बोध, सृजनात्मकता एवं स्वस्थ साहित्य से ओत-प्रोत रहेगी।

हिन्दी अनुभाग

अनुक्रमणिका

क्रम सं	विषय	लेखकों के नाम व पदनाम
1	मिट्टी बचाओ	श्री.आर.गुरुप्रसाद (सुपुत्र:श्री एस.रविशंकर/ सलेपअ/ आईटीआरए
2	भारत की पारंपरिक लोक कलाओं को बचाने के तरीके एवं साधन	सव्य साची भगत/ वरिष्ठ.लेखापरीक्षक
3	राजभाषा हिन्दी	संजय घोष / वरिष्ठ.लेखापरीक्षक
4	मेरी छुट्टी यात्रा	बी. ऐश्वर्या/ सी.वी. बाबू, वलेपअ की सुपुत्री
5	बेजुबान	ज्ञानश्री दिब्येन्दु बेहेरा /लेखापरीक्षक
6	आंध्रप्रदेश का हिलस्टेशन हॉर्सले हिल्स	संजोय घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
7	स्वास्थ्य और पर्यावरण	बी. भुवनेश्वरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
8	ऐ जिन्दगी तू, मेरे साथ चल	बिरेन्द्र कुमार यादव, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
9	जलवायु का बदलता मिजाज और बढ़ती बीमारियाँ	सव्यसाची भगत/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
10	अध्यात्म: अपने आंतरिक स्व से जुड़ाव	ब्रिगेश कुमार सुमन/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
11	बुजुर्गों को जिम्मेदारी दीजिए	जे. पुष्कला/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
12	एक कामकाजी खिलाड़ी का जीवन	अभिषेक कुमार/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
13	आत्मविश्वास	जानकी दिवाकरन/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
14	गंगटोक: एक शानदार पर्यटन स्थल	विक्रम कुमार/ लेखापरीक्षक
15	हम क्यों कमाते हैं ?	सुगन्धी विक्रम/ सलेपअ
16	उम्र सिर्फ एक संख्या है- अचंता शरत कमल	श्रुति रामकुमार
17	खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2021 में मेरा अनुभव	श्री टी. के. रामकुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की पुत्री
18	जीवन में अनुशासन का महत्व	प्रवीण कुमार मीना/ डीईओ
19	चित्र प्रस्तुति	अन्नपूर्णी संजीव, नेहा साव गुप्ता, नव्या विजय, गायत्री रामस्वामी (सभी छात्राएँ हैं)
20	चुप रहूँ या बोलूँ... चुप रहूँ या बोलूँ	श्वेता कुशवाहा/ आशुलिपिक
21	हिन्दी अनुभाग की तरफ से "अनुभव"	डॉ एस सुधावल्ली, विजयेता साव गुप्ता, राहुल साव
22	हिन्दी अनुभाग की गतिविधियां	
23	पदोन्नत/ सेवानिवृत्त पदधारियों की सूची	
24	कल्याण गतिविधियां	



श्री.आर.गुरुप्रसाद (सुपुत्र:श्री एस.रविशंकर/

सलेपअ/ आईटीआरए

मिट्टी बचाओ



- मिट्टी बचाओ सद्गुरु द्वारा शुरू किया गया एक वैश्विक अभियान है, जो मिट्टी के संकट को दूर करने के लिए दुनियाभर के लोगों को एक जुट कर रहा है।
- यह अभियान, खेती की मिट्टी में जैविक (ऑर्गेनिक) सामग्री को बढ़ाने के लिए सभी देशों के नेताओं को राष्ट्रीय नीतियां बनाने और कार्रवाई करने में मदद कर रहा है।
- प्रोजेक्ट ग्रीन हैंड्स, नदी अभियान, कावेरी कॉलिंग और अब मिट्टी बचाओ आंदोलन, सद्गुरु के मिट्टी पर ध्यान आकर्षित करने के प्रयास 2 दशकों से अधिक समय से चल रहे हैं।
- जीवित मिट्टी की विरासत को पीछे छोड़कर जाना हमारी पीढ़ी की जिम्मेदारी है। हमारे बच्चों और आने वाली पीढ़ियों की खुशहाली मिट्टी पर निर्भर करती है। अगर आप खाना खाते हैं और पानी पीते हैं, तो आपको मिट्टी बचाओ अभियान में हिस्सा जरूर लेना चाहिए। मिट्टी की आवाज बनें।
- क्या आप जानते हैं कि मेसोपोटामिया, माया और रोमांस हॉट महान प्राचीन सभ्यताओं के पतन का एक मुख्य कारण था मिट्टी की क्वालिटी का खराब होना? आज हम भी उसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अभी कदम उठाए !
- स्वस्थ माने जाने के लिए मिट्टी में कम से कम 3-6 % जैविक पदार्थ होना जरूरी है। लेकिन क्या आप जानते हैं, दुनिया के कई हिस्सों में, मिट्टी में जैविक पदार्थ 3% ही है, या फिर उसे भी

मात्र पिछले 20 सालों में मिट्टी की खराब होती स्थिति के कारण, भारतीय बीन्स में उपस्थित प्रोटीन का स्तर

60% तक गिरा है

(Down To Earth, 2017)



भारत की मिट्टी का 63% हिस्सा

0.5% से भी कम जैविक (ऑर्गेनिक) कार्बन की मौजूदगी के साथ गंभीर स्थिति में है

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)



सत्य साची भगत/ वरिष्ठ.लेखापरीक्षक



भारत की पारंपरिक लोक कलाओं को बचाने के तरीके एवं साधन

भारत में लोक कलाओं का बड़ा महत्व है। ये न केवल हमारी परंपरा का हिस्सा है बल्कि ये हमारे जीवंत इतिहास की कड़ी है। तंजावुर की चित्रकलाएँ, संथाली लोकचित्र, मधुबनी की चित्रकारी, गोंड की लोकचित्र आदि भारत में प्रचलित कुछ महत्वपूर्ण लोक कलाएँ हैं। सभी लोक कलाओं में अलग-अलग तरीके से रंगों का उपयोग, देवताओं की प्रतिमाएँ, उनकी भाव-भंगिमाएँ, मुद्राएँ देखने को मिलती हैं। परंतु आधुनिकीकरण व बाजारीकरण के आज के दौर में इन लोक कलाओं का दम घुट रहा है। अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड, आदिवासी कल्याण मंत्रालय एवं भारत सरकार के भिन्न-भिन्न भागों में प्रचलित लोक कलाओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन बाजार एवं इंटरनेट के दौर में आज जरूरत है कि नए सिरे से प्रयास किया जाए एवं लोक कलाओं को विभिन्न बाजारों व उपभोक्ताओं से जोड़ा जाए। लोक कलाओं को बचाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण तरीके निम्नलिखित हैं:

1.कला को बाजार से जोड़ना- जब तक कला को बाजार से नहीं जोड़ा जाएगा कला का उचित मूल्य लोक कलाकारों को नहीं मिलेगा। सही मूल्य मिलने से उनका मनोबल भी बढ़ेगा।

2.स्त्रियों को रोजगार-हमारे यहाँ अक्सर स्त्रियाँ घर में रहकर खाली समय में लोक कलाओं, चित्र, अनेक तरह के डिजाइन आदि बनाती हैं। जरूरत है तो उनको प्रोत्साहन एवं मूल्य प्रदान करने की। इससे स्त्रियों का मनोबल एवं आमदनी दोनों में बढ़ोतरी होगी।

3.वर्कशॉप का आयोजन-वर्कशॉप के आयोजन से स्थानीय कलाकारों में कला, डिजाइन एवं रंगों की समझ बढ़ती है। साथ ही उत्कृष्ट कलाकारों को सम्मान भी मिलता है जो कला के निरंतरता को बढ़ाने में मदद करेगा।

4.अंतरराष्ट्रीय कलाकारों का सहयोग-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कलाकारों के साथ सहयोग व सम्मिलन से स्थानीय कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बनाने का मौका मिलेगा।

5.उपभोक्ता से संवाद-उपभोक्ता से संवाद से कलाकार यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उपभोक्ताओं की जरूरत व समझ कैसी है। तदनुरूप ही कला का सम्मान संभव है।

पत्रिका की रूप रेखा एवं साज सज्जा:

श्री वी गोकुलनाथ

डॉ. एम.सुधावल्ली/हिन्दी अधिकारी का पुत्र



संजय घोष / वरिष्ठ.लेखापरीक्षक



राजभाषा हिन्दी

हिन्दी हमारी राजभाषा है, लेकिन अभी भी हिन्दी का प्रसार उसी तरह नहीं हुआ है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु, संविधान में 343 से 351 तक धाराएं बनाई गई हैं। आजादी के पहले से लेकर आज तक राजभाषा हिन्दी के उन्नयन में काफी महानुभावों का योगदान रहा है। हम हिंदी भाषा का प्रयोग किसी न किसी रूप में कर ही लेते हैं। हम अपने विद्यालय में या अपने मित्रों के साथ खेल के मैदान में हिंदी भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इस को एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिए। महात्मा गांधी हिन्दी भाषी नहीं थे, लेकिन वे जानते थे कि हिन्दी ही देश की संपर्क भाषा बनने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। उन्हीं की प्रेरणा से राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का गठन किया था।



बी. ऐश्वर्या/ सी.वी. बाबू, वलेपअ की सुपुत्री



मेरी छुट्टी यात्रा

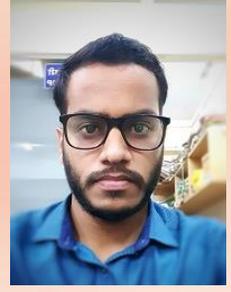
मैं इस बार स्कूल की छुट्टियों में अपने पूरे परिवार के साथ मेघालय घुमने गयी। हमलोगों की दस दिनों की हवाई यात्रा थी। सर्वप्रथम हमलोग चेन्नै अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से गुवाहाटी पहुँचे। हमारी यात्रा शाम को थी एवं हमें सूर्यास्त देखने का मौका मिला। अतः विमान का सफर बहुत ही उत्साहपूर्ण था। गुवाहाटी पहुँचते हुए रात हो गई। मेरे पिताजी एवं चाचाजी केंद्रीय सरकारी कर्मचारी हैं अतः गुवाहाटी पहुँचने के पश्चात् हम सीपीडब्ल्यूडी कर्मचारी अवकाश गृह में विश्राम करने के लिए रुके। उसके पश्चात् भोजन किया जो अत्यंत स्वादिष्ट था। अगले दिन हमें उमानंद एवं कामाख्या मंदिर जाना था अतः सुबह नाश्ता करने के बाद मंदिर भ्रमण के लिए निकल गए। दोनों मंदिर अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक हैं।

मंदिर देखने के पश्चात् हम सभी संग्रहालय देखने गए। वहाँ बच्चों के लिए वैज्ञानिक खेल एवं 3डी सिनेमा भी था जिसमें मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक चलचित्र दिखाए जा रहे थे। संग्रहालय देखने के पश्चात् हम वापस लॉज में आ गए क्योंकि अगले दिन हमें शिलांग जाना था। अगली सुबह हमलोग शिलांग के लिए निकल गए। वहाँ हमलोग दोपहर तक पहुँचे एवं एक गेस्ट हाउस में ठहरे। दोपहर को भोजन करने के पश्चात् हमलोग वहाँ बाजार घूमने गए। हमलोगों ने वहाँ बहुत सारी शॉपिंग की। चूंकि अगले दिन हमें चेरापूंजी के लिए भी जाना था एवं वहाँ ठण्ड के साथ-साथ वर्षा भी होती है अतः हमलोगों ने बाजार से छतरी एवं स्वेटर भी खरीद लिया। अगले दिन हम सूर्योदय के पहले ही निकल पड़े। वहाँ पहुँचने के बाद हमारी दृष्टि सबसे पहले 'सेवन सिस्टर फॉल्स (Seven Sister Falls) पर गई, हालांकि खराब मौसम के कारण हम 'सेवन सिस्टर फॉल्स' को हम नजदीक से नहीं देख सकते थे अतः हमें दूरबीन से उसे देखना पड़ा। इसके पश्चात् हमने जीवित जड़ सेतु देखा, जीवित वृक्षों की जड़ों को अनुवर्धित कर इन्हें जलधारा के आर पार एक सुदृढ़ पुल में परिवर्तित कर देते हैं। शाम होने को आई थी इसलिए हमलोग अब वापस चले आए। अगले दिन हमलोग गंगटोक नदी गए। यह नदी अत्यंत सुंदर, स्वच्छ एवं पारदर्शी थी, नदी में नौका विहार भी थी एवं इसी नदी पर भारत-बांग्लादेश सीमा है। इसके बाद हम एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव मावलिननॉन्ग गए। वहाँ के खुबसूरत नजारों को तस्वीरों में उतार दिया। इसी के साथ हमारी यात्रा पूरी हो गई।

अगले दिन होटल से गुवाहाटी एवं गुवाहाटी से वापस चेन्नै वापस आ गए। यह यात्रा बहुत साहसिक, मजेदार, एवं अनुभव से भरी थी एवं इस यात्रा को मैं कभी नहीं भूल सकती।

ज्ञानश्री दिव्येन्दु बेहेरा /लेखापरीक्षक

बेजुबान

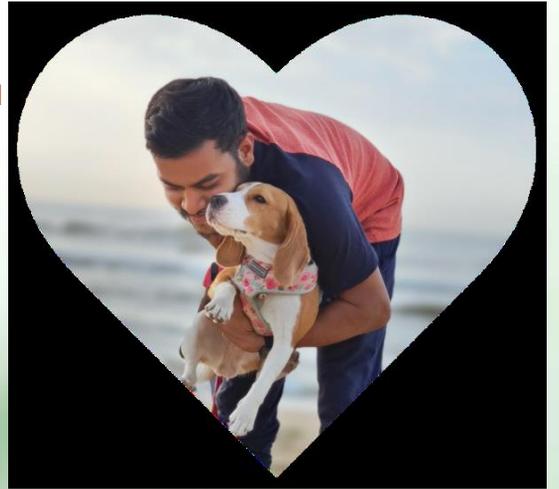


हाँ वो बेजुबान है, पर प्यार बेहंतहा करती है ।
पूँछ हिलाये कभी उछले कूदे, खुशियां भर-भर लाती है ॥
हाँ वो बेजुबान है.....
कई तरह की आवाजें करके, हर सुबह मुझे उठाती है ।
टहलने जाती जब भी वो बाहर, रोज नए दोस्त बनाती है ।
कभी-कभी पंगे भी लेती है ॥
हाँ वो बेजुबान है.....
उसके सिवा कभी कहीं मैं जाऊं, दरवाजे पे रोने लगती है ।
साथ घूमना है पता चले तो झट से तैयार हो जाती है ।
गाड़ी के आगे बैठ जाती है ॥
हाँ वो बेजुबान है.....

दफ्तर से मेरे आने का घंटों इंतजार करती है ।
मेरी राह देख-देख चौखट पे सो जाती है ॥
हाँ वो बेजुबान है.....
दरवाजे पे अजनबी आये तो भौंक-भौंक के बता देती है ।
पसंद का खाना कभी मिले तो थाली चट कर जाती है ॥
हाँ वो बेजुबान है.....
घर में कोई दुखी हो तो उसे पता चल जाता है ।
गोंद में आके मुँह को चाटे आँसु हँसी बन जाती है ॥
हाँ वो बेजुबान है.....

डांट पड़े तो दौड़ के जाके पलंग के नीचे छुपती है ।
नजर झुकाए आँखें मटका के हमें वो पिघला देती है ॥
हाँ वो बेजुबान है.....
छल-कपट उसे पता नहीं है बस प्यार उसे समझ आती है ।
मम्मी की दुनिया, पापा की लाड़ली वो क्या उसे ये सब पता है ?
हाँ वो बेजुबान है, पर प्यार बेहंतहा करती है ।
पूँछ हिलाये कभी उछले कूदे, खुशियां भर-भर लाती है ॥

मैं और मेरी kismis ♡



संजोय घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आंध्रप्रदेश का हिलस्टेशन हॉर्सले हिल्स



बहुत दिनों से कहीं घूमने नहीं गए, घर पर बैठे-बैठे मैं एवं मेरे परिवार के सभी सदस्य तंग आ चुके थे। 'कहाँ चला जाए घूमने' यह सोचते-सोचते तय हुआ कि हॉर्सले हिल्स चलते हैं। हॉर्सले हिल्स आंध्रप्रदेश के चिन्तूर जिले के मदनपल्ली शहर के पास स्थित एक पहाड़ी इलाका है। हिलस्टेशन हॉर्सले हिल्स बेहद खुबसूरत जगह है, यहाँ के ऊँचें पहाड़ से सूर्योदय एवं सूर्यास्त देखने लायक हैं।

मेरी छोटी सी गाड़ी में हमने सुबह 5 बजे अपना सफर शुरू किया। हमारे साथ मेरा एक दोस्त एवं उनका परिवार भी अपनी गाड़ी में था। खास बात यह है कि मेरे बेटे के हाथ में पहलीबार गाड़ी की डोर थी। रास्ता बहुत सुंदर था, हम पहले वेल्लोर पहुँचे और सुबह का नाश्ता किया। फिर आगे चलते गए, हमारी मंजिल चेन्नै से 274 किलोमीटर की दूरी पर थी। हम पहले चिन्तूर जिला पहुँचे, रास्ता बहुत ही खुबसूरत था। इधर हम थोड़ी देर चाय पीने के लिए रुके, चेन्नै से मदनपल्ली करीब पाँच घंटे का सफर है, हम दोपहर बारह बजे के करीब चिन्तूर जिला पहुँचे।

अभी तक हम मैदानी इलाके से होते हुए हॉर्सले हिल्स के गेट पर अंततः पहुँचे एवं पहुँचने के पश्चात् हमने 100 रु का टिकट लिया, टिकट लेने के बाद हमने 20 कि.मी. की चढ़ाई शुरू की। रास्ता बहुत ही सुंदर था। इसमें बहुत सारे तंग मोड़ थे। हॉर्सले हिल्स की चढ़ाई करते समय रास्ते में हमें सबसे पहले गंगोत्री झील के दर्शन हुए। इस झील का दृश्य अत्यंत मनोरम था। इसके बाद हम आगे प्रस्थान किए। चलते हुए हम आंध्र प्रदेश सरकार पर्यटन कॉटेज पहुँचे, जिसके लिए हमने पहले ही पंजी करवा लिया था। यह कॉटेज पहाड़ पर स्थित होने के कारण पूरे शहर का मनोरम दृश्य दिखाई दे रहा था। कॉटेज पहुँचने के बाद, थोड़ी देर हमने विश्राम किया एवं दोपहर के भोजन के पश्चात् हम आस-पास के दर्शनीय स्थल देखने गए।



हॉर्सले हिल्स का स्थानीय नाम मलम्मा कोंडा है। यहां मलम्मा नाम की एक लड़की जो हाथियों को चारा डाला करती थी। एक दिन वह अचानक गायब हो गई, जिसके बाद स्थानीय लोगों ने इस स्थान का नाम मलम्मा के नाम पर रख दिया गया एवं इसके नाम का एक मंदिर भी यहाँ बनवाया गया था। बाद में सन् 1870 में ब्रिटिश कलेक्टर डब्ल्यू. डी. हार्सिली के नाम पर इस स्थान का नाम हॉर्सले हिल्स पड़ गया।



इसके बाद हमने कौडिन्य वन्यजीव अभ्यारण, पर्यावरण पार्क देखा। इस पहाड़ी इलाके में जंगल का वातावरण मनमोहक था। यहाँ उँची पहाड़ी से सूर्यास्त का अनोखा नजारा भी देखने को मिला। ठंड पड़ने के कारण शाम होते ही हम कॉटेज में आए एवं गरमा-गरम चाय का आनंद लिया। एक तरफ जहाँ चेन्नै में गर्मी पड़ रही है, इसके विपरीत यहाँ ठंड पड़ रही है। इस कारण हमने रात्री भोजन के लिए कॉटेज के स्टाफ को ही बोल दिया। उन्होंने भोजन का प्रबंध कर दिया। अगले दिन प्रातःकाल जल्दी उठकर सूर्योदय का लुत्त उठाना था अतः हम भोजन करने के बाद जल्द ही सो गए। अगली सुबह हम जल्दी उठकर सूर्योदय का आनंद उठाया। इसके बाद अब समय आ गया था कि हॉर्सले हिल्स को अलविदा कहें। हम रात तक घर वापस आ गए लेकिन हॉर्सले हिल्स की यादें अब तक मन मस्तिष्क में हैं। वहाँ पर बिताये उन पलों को हम भूल नहीं पाएँगे।



बी. भुवनेश्वरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



स्वास्थ्य और पर्यावरण

पर्यावरण का हमारे स्वास्थ्य से सीधा संबंध है। हमारे पास रहने का कैसा स्थान है?, हमारा घर कैसा है?, हमारे चारों ओर का वातावरण कैसा है?, हमारा पानी शुद्ध है अथवा नहीं, आस-पास सफाई है अथवा नहीं, जिस वायु में सांस लेते हैं वह कैसी है?, इन सबका हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण हमारे निवास के लिए प्राप्त स्थानों में कमी आई है। शहर में एक मकान में सौ व्यक्ति तक रहते हैं। भीड़-भाड़ वाले जगहों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। रहने का स्थान उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना भोजन। स्वस्थ जीवन के लिए हमारा घर साफ-सुथरा, हवादार और खुला होना चाहिए। ताजी हवा और रोशनी के लिए इसमें प्रयाप्त संख्या में खिड़की और रोशनदान होने चाहिए। जिस मकान में ताजी हवा और रोशनी पर्याप्त मात्रा में नहीं आती, उसमें रहने वालों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। घर में धूप आना भी अति आवश्यक है। धूप से हमारे शरीर में विटामिन-डी का निर्माण होता है। धूप की गर्मी से रोग पैदा करने वाले जीवाणुओं का भी विनाश होता है।

स्वच्छ जल के अभाव का स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव पड़ता है। पीने का पानी जीवाणु रहित, हानिकारक रसायनों से रहित और स्वच्छ होना चाहिए। दूषित जल से पेट के अनेक विकारों का जन्म होता है। हमारे देश में जल संबंधी रोगों से अधिकांश लोग पीड़ित रहते हैं, यद्यपि शहरों में पानी को शुद्ध करके घरों में भेजा जाता है परंतु फिर भी हमें पानी को फिल्टर करके या उबालकर ही पीना चाहिए।

हमारे भोजन का स्वास्थ्य से और भोजन का पर्यावरण से सीधा संबंध है। भोजन साफ-सुथरा और पोषक होना चाहिए। दूध एक अत्यंत पोषक भोजन है, इसलिए इसका प्रयोग बहुत जरूरी है। भोजन से शरीर को कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज आदि मिलते हैं, जो हमें स्वस्थ बनाए रखते हैं।

वायु, जल एवं सूर्य का प्रकाश प्रकृति की अनुपम देन है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए पर्यावरण का साफ-सुथरा होना अति आवश्यक है।

**"एकता की जान है,
हिंदी देश की शान है"**

बिरेन्द्र कुमार यादव, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ऐ जिन्दगी तू, मेरे साथ चल



ऐ जिन्दगी तू, मेरे साथ चल,
अब नई कहानी लिखते हैं ।
छोड़ अब किसी की उम्मीद,
अब खुद की तलाश करते हैं ।
काफी वक्त गुजार दी हमने सोचने में,
आ अब नई शुरूआत करते हैं ।
जो पल बचे हैं, तेरे मेरे साथ के,
एक दूसरे को सँवारने में गुजारते हैं ।
पता है मुझे, कुछ शिकायतें हैं तुम्हें,
आ मिलकर साथ उसे सुलझाते हैं ।
चल खत्म करें अब अपनी नोंक-झोंक,
एक दूसरे की अब अपनाते हैं ।
बची है जो ताकत मेरे बाजुओं में,
आ साथ मेरे अब नई कहानी लिखते हैं ।
कुछ तुम साथ दो, कुछ मैं मेहनत करता हूँ,
आ जिंदगी साथ में, नई मंजिल पर चलता हूँ ।
थोड़ी सी समझदारी और थोड़ा सा समझौता,
आ अब पुराने रास्ते को छोड़, नए रास्ते पर चलते हैं ।
ऐ जिन्दगी तू, मेरे साथ चल,
अब नई कहानी लिखते हैं ।

ना भूलो तुम जलियांवाला बाग
ना भूलो तुम चौरी-चौरा,
इस स्वतंत्रता दिवस पर याद
करो उनको जिन्होंने देश के
लिए न्योछावर कर दिया
अपना जीवन पूरा।

सव्यसाची भगत/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक



जलवायु का बदलता मिजाज और बढ़ती बीमारियाँ

किसी स्थान विशेष के मौसम की औसत दशा को सामान्यतः जलवायु कहते हैं। जलवायु वस्तुतः किसी स्थान विशेष की दीर्घकालीन मौसमी दशाओं के विवरण को सम्मिलित करती है। जलवायु में एक विस्तृत क्षेत्र में दीर्घकाल का वायुमण्डलीय अवस्थाओं का विवरण होता है। किसी भी क्षेत्र की जलवायु के आधार पर ही मानवीय जीवन के रहने, खाने, पहनने आदि का निर्धारण होता है। उदाहरण के लिए मैदानी इलाकों में मकान, भोजन पहनावा आदि ठंडे प्रदेशों की तुलना में बिल्कुल अलग होता है।

सामान्यत जलवायु परिवर्तन बहुत ही धीमी प्रक्रिया है, लेकिन पिछले 20-25 वर्षों में यह बहुत तेजी से हो रही है। मानव जीवन प्रकृति आधारित न होकर सुविधाओं के आधार पर आगे बढ़ रहा है। लोग सुविधाओं के चक्कर में दिन-प्रतिदिन स्वार्थी होते जा रहे हैं। जैसे एयरकंडीशर घर को ठंडा करता है लेकिन घर के बाहर का तापमान बढ़ाता है। मोटरगाड़ियाँ सुविधाओं से लैस होते जा रहे हैं लेकिन बहुत ज्यादा वायु को प्रदूषित करते हैं। कृत्रिम खाद, कीटनाशक थोड़े समय के लिए फसलों के लिए वरदान है लेकिन अंततः ये मिट्टी को बुरी तरह प्रभावित एवं प्रदूषित करते हैं। महानगरों में घरों, उद्योगों आदि का कचरा जल में प्रवाहित करने से जल की गुणवत्ता बहुत बुरी तरह से प्रभावित हुई है।

इन सब वजहों से मानव द्वारा ग्रहण की जाने वाली चीजों की गुणवत्ता का स्तर काफी गिर गया है। फलस्वरूप कई तरह की बीमारियाँ जैसे- ब्लडशुगर, रक्तचाप, हृदयघात, पेट की बीमारियाँ, घुटने में दर्द आजकल आम हो गई है। अब तो कम उम्र के व्यस्क भी इन बीमारियों से प्रभावित हो रहे हैं। यह काफी चिंताजनक है।

ग्रीष्मऋतु में जहाँ पहले अधिकतम तापमान 30-35 डिग्री होता था, परन्तु आज 50-52 डिग्री तक चला जाता है। लू के गर्म थपेड़ों से जनमानस बेहाल हो जाते हैं। वर्षा भी आजकल थोड़े अंतराल पर अत्यधिक होती है या तो कई वर्षों तक होती ही नहीं है। फलस्वरूप फसलों की गुणवत्ता व मात्रा दोनों प्रभावित हुए हैं।

हम सबको मिलकर जलवायु, मिट्टी, वायु, जल आदि के संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। अगर सब मिलकर ईमानदारी से प्रयास करें तो संभव है कि मिट्टी, जल, वायु की गुणवत्ता में सुधार हो एवं मानव द्वारा ग्रहण की जाने वाली चीजों का स्तर भी अच्छा हो जाए। फलतः बीमारियाँ भी कम होंगी।

सौधी सुगंध, मीठी सी भाषा
गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा

हिंदी

ब्रिगेश कुमार सुमन/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक



अध्यात्म: अपने आंतरिक स्व से जुड़ाव

अध्यात्म को अक्सर ही गलत समझा जाता है एवं ज्यादातर धर्म से जोड़कर देखा जाता है। अध्यात्म व्यक्ति के लिए एवं व्यक्ति के द्वारा है जबकि धर्म का मतलब समुदाय से है एवं सामुदायिक प्रथाओं व सिद्धांतों से है। धर्म एवं धार्मिक प्रथाओं में ज्यादातर प्रार्थना और चढ़ावा चढ़ाते हैं जबकि अध्यात्म व्यक्ति को लेने (प्राप्त करने) एवं स्वीकार करने के लिए तैयार करता है। अध्यात्म व्यक्ति को सुंदर, स्वस्थ एवं शक्तिशाली बनाता है। सामान्यतः व्यक्ति के तीन मुख्य अंग होते हैं – 1) मन, 2) शरीर, 3) आत्मा। शरीर को आप देख, सुन व समझ सकते हैं। यह एक सच्चाई है कि कमजोर शरीर वालों का मन बहुत कमजोर होता है एवं आत्मा तो और भी कमजोर हो जाता है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व.पंडित जवाहर लाल नेहरू ने एक बार कहा था कि बीमार पड़ना एक अपराध है। अगर कोई व्यक्ति व्याधियों से अपने आप को बचाकर रखता है तभी वह अपने शरीर को मजबूत बना सकता है। व्यक्ति का मजबूत शरीर कई तरह के कार्यों का संपादन आसानी से करने में काफी मदद करता है। इस संदर्भ में यह काफी महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम अपने आपको विभिन्न व्याधियों से बचाकर रखें।

सामान्यतः यह माना जाता है कि जिनका शरीर मजबूत है, स्वस्थ है उनका मन भी स्वस्थ और मजबूत होता है। आप सिर्फ कल्पना कीजिए क्या होता है जब मनुष्य कमजोर करने वाली विचार, अविश्वास अस्वीकृत हो जाने या छोड़ दिए जाने वाले ख्यालों में उलझ जाता है। ऐसा मन व्यक्ति को कहीं नहीं पहुँचने देता है। ऐसे व्यक्ति के लिए सामान्य से कर्तव्यों का निर्वहन भी मुश्किल हो जाता है। उसकी भूख खत्म हो जाती है और किसी भी स्तर पर कार्यों का संपादन करने की क्षमता का ह्रास हो जाता है। मनोचिकित्सकों का कहना है कि मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्वपूर्ण है। आत्मा अदृश्य है एवं सामान्यतः इसको महसूस करना भी मुश्किल है। यह व्यक्ति के अंदर काफी गहराई में होती है। आप इसको तब सुन सकते हैं, महसूस कर सकते हैं जब यह जागृत हो। यह व्यक्ति के काफी अंदर की परत है जो जब जागृत हो तो व्यक्ति को बड़े-बड़े काम करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

सफल लोगों के साक्षात्कार में अक्सर पूछा जाता है कि आपको ऐसा करने की प्रेरणा कहाँ से मिली उनका जवाब Gut feelings होता है। अगर इस Gut feelings का विश्लेषण किया जाए तो समझ आएगा कि यही आत्मा की आवाज है जो व्यक्ति के अंदर है, जो व्यक्ति के अंदर से आती है। इससे इसकी महत्ता स्पष्ट होती है।

अध्यात्म व्यक्ति के मन, शरीर एवं आत्मा को एक सूत्र में पिरोता है। एक सामान्य सा अभ्यास जो व्यक्ति को प्रकृति, हवा, मिट्टी, जल तथा आकाश से जोड़े, व्यक्ति को अध्यात्म की ओर ले जाता है। आप सुबह जल्दी उठे और नंगे पाँव चलने का अभ्यास करें- ध्यान रहे, बहुत धीमे चलना है, वास्तव में जितना धीरे संभव हो सके। अगर व्यक्ति यह अभ्यास करता है तो जल्द ही अपने अंदर अध्यात्मिक ऊर्जा को अनुभव करने लगता है। साथ ही मन, शरीर और आत्मा का भी जुड़ाव होने लगता है। व्यक्ति को अंदर उपचारात्मक क्षमता में वृद्धि होने लगती है एवं बड़े स्तर पर कार्यों का संपादन व्यक्ति आसानी से करने लगता है। यह अध्यात्म की शक्ति है और ऐसा तभी संभव है जब आप अपने अंतर से जुड़ने लगते हैं।



दिसंबर 2021 को आयोजित कार्यशाला में श्री टी.के. रामकुमार/
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी, श्रीमती एस. मालती, अतिथि वक्ता एवं
डॉ. एस. सुधावल्ली/हिन्दी अधिकारी

जे. पुष्कला/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



बुजुर्गों को जिम्मेदारी दीजिए

नाज़ुक उम्र में ही मेरी बुआजी के पति की देहांत हो गई। उनके बच्चे नहीं थे। वह मुझे और मेरे छोटे भाई को अपने बच्चों की तरह पालती थी। मेरी शादी हो गई थी और मेरे भाई को एक काम के सिलसिले में विदेश जाना था। इसलिए हमने उनको वृद्धाश्रम में छोड़ा।

एक दिन उस वृद्धाश्रम से एक महिला ने फोन किया और पूछा “आपकी बुआ का हृदय बहुत कमजोर है, डॉक्टर ने कहा कि वे अभी ज्यादा दिन नहीं बच सकती हैं, अंतिम दिनों में उनका परिवार जनों के साथ समय बिताना ही उचित है, क्या आप उनको यहाँ से ले जा सकती है ?

हम तुरन्त बुआजी को घर लेकर आए। तब मेरी बड़ी बेटी को बच्चा हुआ एक महीना ही हुआ था, मेरी दूसरी बेटी कॉलेज में पढ़ रही थी। एक अनिवार्य प्रशिक्षण हेतु मुझे दो महीने के लिए दिल्ली जाना पड़ा।

खाना बनाने और घर के अन्य काम के लिए एक जानी-पहचानी औरत को रखकर, उपरी जिम्मेदारी को बुआ के हाथों में सौंपकर, मैं दिल्ली चली गई। पर मेरे घर के अन्य लोग बुआजी के साथ थे। मेरी दोनों बेटियों की देखभाल, घर में नवजात शिशु, मेरे पति को ऑफिस भेजने जैसे घर के कार्यों की देखरेख के साथ, हमारे छत में जो छोटा बगीचा था, उसकी देखभाल भी करती थी।

दो महीने की प्रशिक्षण के पश्चात्, जब मैं घर पहुँची तो मैं बुआजी को डाक्टर के पास नियमित चेकअप के लिए ले गई। डॉक्टर खुद हैरान हो गए कि उनकी तबीयत पहले से बेहतर एवं स्वस्थ और ऊर्जावान है। इतना ही नहीं, बुआजी बोली “बेटा, सारा दिन चुस्त रहने एवं आस-पास बच्चे रहने के कारण, मुझे ऐसा लगा रहा है कि मैं स्वस्थ एवं फुर्तीली है, मैं अब यही आप लोगों के साथ ही रहूँगी।” यह सुनकर हमारे परिवार में सब बहुत खुश हुए।

बुजुर्गों को जिम्मेदारी एवं निर्णय लेने के अवसर प्रदान कर, उन्हें यह आश्वासन देना चाहिए कि वे इस परिवार के एक महत्वपूर्ण अंग हैं। साथ ही, प्रकृति के साथ मिलकर, पेड़-पौधों की देखभाल, सार्वजनिक बगीचा एवं समुद्र के किनारे का सैर, घर के हर फैसलों में एवं हर काम में उनसे परामर्श मांगना आदि उन्हें गतिशील, सक्रिय एवं चुस्त रख सकते हैं। इससे घर का माहौल हमेशा आनन्दमय रहता है।

अभिषेक कुमार/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक कामकाजी खिलाड़ी का जीवन



सामान्यतः लोगो में यह अवधारणा है कि पेशेवर खेल खेलना बच्चों का काम है, कोई भी स्पोर्ट्स खेल सकता है एवं उच्चतम स्तर पर पेशेवर तरीके से प्रतिस्पर्द्धा कर सकता है। यहाँ वे लोग भूल जाते हैं कि किसी खेल को शौक के लिए खेलना अलग बात है एवं पेशेवर तरीके से खेलना अलग बात है। जब आप शौक के लिए खेलते हैं तो वह केवल एक मनोरंजन होता है, जबकि जब आप पेशेवर तरीके से खेलते हैं तो आपका लक्ष्य जीत प्राप्त करना होता है क्योंकि इस समय पर आप अपने कार्यालय/ जिला/राज्य या देश का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसके साथ-साथ आपके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी भी होती है। जब कोई खिलाड़ी बड़े स्तर पर टूर्नामेंट जीतता है तो वह अपने वहाँ उपलब्ध बुनियादी ढाँचा, सुविधाएँ, कोचिंग, एवं कार्यालय/ जिला/राज्य या देश से मिले समर्थन को दिखाता है।

सामान्यतः कई राष्ट्रीय स्तर पर खेलने वाले खिलाड़ियों को सरकारी संस्थाओं द्वारा खिलाड़ियों की जीविका एवं खेल को बढ़ावा देने के लिए नियुक्ति की जाती है। जब किसी खिलाड़ी की नियुक्ति सरकारी कार्यालय में होती है, तो उनकी मुलाकात कार्यालय में कार्यरत लोगों से होती है, साथ ही उन्हें कार्यालय से संबंधित कार्य भी करने होते हैं एवं उनसे पेशेवर तरीके से कार्य करने की उम्मीद भी की जाती है। यह एक सामान्य बात है कि खिलाड़ियों को काफी चीजों पर ध्यान देना पड़ता है, जैसे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, अभ्यास, तकनीक, खेल में होने वाले परिवर्तन, आने वाले टूर्नामेंट की जानकारी आदि। यदि वह खिलाड़ी महिला है, तो उनकी परेशानी बढ़ जाती है। उन्हें कार्यालय, अपने खेल का प्रशिक्षण के साथ-साथ घर के काम भी करने पड़ते हैं जो अत्यंत दुःख की बात है। यह समझा जा सकता है कि कठिन मेहनत करने से शरीर थक जाता है एवं ऐसा भी देखा गया है कि नौकरी मिलने के पश्चात् कार्य के अत्यधिक दबाव के कारण प्रतिस्पर्द्धाओं में उन्हें हार का सामना करना पड़ता है। वास्तव में खिलाड़ियों को सफलता तब प्राप्त होती है जब पूरा सिस्टम उनके समर्थन में खड़ा होता है। घर हो या कार्यालय, सभी जगह इन खिलाड़ियों को लगातार समर्थन एवं प्रेरणा की जरूरत होती है। उनकी तुलना दूसरे पेशेवर कार्यरत लोगों से नहीं की जानी चाहिए। यह भी सत्य है कि जब ये खिलाड़ी जीतते हैं तो परिवार, कार्यालय, जिला, राज्य एवं देश का नाम रोशन होता है साथ ही साथ आने वाली पीढ़ी को भी प्रेरित करते हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी का भी नारा है –“खेलेगा इंदिया, तो बड़ेगा इंडिया।”



आत्मविश्वास

“सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण कुंजी ‘आत्म-विश्वास’ है और आत्मविश्वास के लिए एक महत्वपूर्ण कुंजी बेहतर तैयारी है।” (अनाम कहावत)

हमें पहले यह जानना है कि आत्मविश्वास क्या होती है ?

आत्मविश्वास अपने आप पर भरोसा करने और किसी निश्चित कार्य करने की क्षमता है।

आत्मविश्वास अपने स्वभाव का एक अंग होता है।

आत्मविश्वास का अर्थ अपने जीवन पर नियंत्रण की भावना रखना है।

लक्ष्य निर्धारित करना, मुखर होना और साथ ही आलोचना को संभालने में सक्षम होना, आत्मविश्वास के लिए अनिवार्य है।

उदाहरण के लिए मैं खुद परेशान थी कि शायद मैं, अपने व्यक्तिगत कारण की वजह से समय के अभाव में “सुगंध” पत्रिका के लिए कुछ लेख पेश कर पाऊंगी या नहीं, लेकिन आत्मविश्वास था कि मैं कुछ ना कुछ सीमित समय में प्रस्तुत करूँगी। जब मैंने लिखने का फैसला किया तो मैंने सोचा कि क्यों न इसी ‘आत्मविश्वास’ विषय पर लिखूँ।

हमें कुछ पाने के लिए और जिंदगी में कुछ बनने के लिए आत्मविश्वास की अति आवश्यकता है। हमारे जीवन के राह में बहुत से उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, किंतु इस उतार-चढ़ाव को पार करने में आत्मविश्वास की बहुत बड़ी भूमिका रहती है। हमें सफलता के शिखर पर पहुँचने में आत्मविश्वास का बहुत बड़ा योगदान रहता है।

हमें जीवन के इस सिद्धांत को हमेशा याद रखना चाहिए कि हमें कभी भी जीवन में मंजिल पाने के रास्ते में पीछे मुड़ कर नहीं देखना चाहिए, हमें ठीक उसी प्रकार जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए जैसे सिपाही आगे बढ़ते हैं, जीवन में चाहे जितनी भी मुसीबत आ जाए, किंतु ना, तो ये डरते हैं और ना ही पीछे हटते हैं। ठीक इसी तरह यदि सकारात्मक विचार एवं ढेर सारा आत्मविश्वास हो, तो मंजिल पर पहुँचने के लिए हमें किसी की सहायता की जरूरत नहीं, और न कोई बाधा हमें रोक सकती है।

हमेशा यह याद रखना चाहिए कि हमें आत्मविश्वास जगाने के लिए सबसे पहले खुद पर विश्वास रखना चाहिए। यह आत्मविश्वास एक दिन में नहीं मिलता, बल्कि यह जन्म से मृत्यु तक जो कार्य करते हैं, उन्ही कार्यों के अनुभव से मिलता है।

जब बच्चा पहली बार चलना सीखता है, तो लड़खड़ाकर गिर पड़ता है लेकिन बिना हार माने बिना लगातार कोशिश करते रहने से वह चलना सीख लेता है, उस समय बच्चे के चेहरे पर आत्मविश्वास झलकता है। इसी प्रकार हमें भी जीवन में बिना हार माने आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए।

आत्मविश्वास भीतरी सौंदर्यता को निखारता है, अतः हमें अपने अच्छे गुणों की तरह आत्मविश्वास को भी बढ़ाते रहना चाहिए। हमें अपनी तुलना किसी से नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी क्षमता होती है। तुलना करने से आत्मविश्वास कम होता है। यह आत्मविश्वास निश्चल भाव एवं सकारात्मक विचारों से आती है।

इस लेख का उद्देश्य लोगों में आत्मविश्वास को बढ़ाना ताकि वें आने वाली पीढ़ी के लिए आदर्श बन सके।

“आत्मविश्वास है तो कार्य शुरू करने से पहले ही तुम जीत चुके हो।” (अनाम कहावत)



नगर राजभाषा
कार्यान्वयन
समिति, चेन्नै



विक्रम कुमार/ लेखा परीक्षक



गंगटोक: एक शानदार पर्यटन स्थल

पिछली गर्मियों में अपने परिवार के साथ मैं गंगटोक गया था। हमारा अनुभव बहुत ही रोचक रहा था। गंगटोक जाने का रास्ता भी बहुत रोमांचक था। हम सबसे पहले रेल द्वारा सिल्लीगुड़ी पहुँचे। वहाँ से हम सभी दार्जिलिंग गए। दार्जिलिंग भी अच्छा पर्यटन स्थल है। वहाँ दिनभर तो मौसम सामान्य था लेकिन शाम होते ही ठंड बढ़ने लगी। यहां के होटलों में कंबल, अलाव जलाने की सुंदर व्यवस्था होती है। गर्म पेय पदार्थ जैसे चाय वहाँ बहुत मशहूर है। ताजी पर्तियों की बनी चाय के स्वाद का क्या कहना। बहरहाल रात भर आराम कर अगले दिन हम लोग गंगटोक के लिए निकले। दार्जिलिंग से गंगटोक की दूरी लगभग 100 कि.मी. है एवं लगभग 4 घंटे का समय लगता है। हमारा ड्राइवर बहुत ही प्रवीण था एवं उसे टेढ़े-मेढ़े रास्तों का उसे पूरा ज्ञान था। गंगटोक जाने का दौरान तिस्ता नदी मिली। इस नदी की धारा बहुत तेज़ है एवं जल निर्मल एवं शीतल। लेकिन नदी तक पहुँचना आसान नहीं है। सड़कों के पहाड़ों पर बने होने के कारण नदी तक जाना व आना दुसाध्य है। पहाड़ों पर अनगिनत लंबे-लंबे पेड़ों की श्रृंखला तो बस मन मोह लेती है। महानगरों का आपा-धापी से दूर यहां का शांत वातावरण, पक्षियों का चहचहाना, एवं नदियों का कल-कल बहना आपको अंदर तक शांत कर देता है। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती है, चित्त की प्रसन्नता भी बढ़ती जाती है।

गंगटोक में हम तीन दिन एवं तीन रातें रुके। पहले दिन हम गंगटोक में रूमटेक मोनेस्ट्री, नामग्याल इंस्टीट्यूट ऑफ तिब्बतोलॉजी, फूल प्रदर्शनी केंद्र, एम.जी मार्ग आदि घूमने गए। एम.जी. मार्ग वहाँ का प्रतिष्ठित स्थान है। दोनों ही तरफ रेस्तराँ, दुकानें आदि हैं। वहाँ का भोजन बहुत ही उम्दा है। वहाँ के दुकानों में चाइना, वर्मा, थाइलैंड, कोरिया आदि द्वारा निर्मित सामानों की बिक्री होती है, जो बहुत ही सस्ते हैं। वहाँ चमड़े के सामान, घर में सजावट की वस्तुएँ, नए फैशन के कपड़े एवं जूते आदि चीजें भी सहज ही उपलब्ध हैं। वहाँ के मठों में अद्भुत शांति होती है। इसके पश्चात् हम अगले दिन बन झाकरी प्रपात गए। झरने के सुंदर एवं शीतल जल ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। वहाँ हम सबने मिलकर खूब मस्ती की। प्रपात का जल शरीर पर पड़ते ही ऐसा महसूस हुआ जैसे तन-मन तरंगित हो गया। गंगटोक की ओर लोगों का आकर्षण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, इसका प्रमुख कारण स्वच्छता का सख्ती से पालन करना एवं धुम्रपान का पूर्णता निषेध होना। रात को पहाड़ों से नीचे घाटियों का दृश्य देख ऐसा प्रतित होता है जैसे लाखों करोड़ों तारे जमीन पर आकर चमक रहे हों। ऐसी और भी बहुत सारी चीजें थीं, जिनका हमने आनंद उठाया, जिसकी चर्चा किसी और लेख में करेंगे। हमें उम्मीद है कि आप भी अगली गर्मियों में गंगटोक घूमने जरूर जाएंगे।

सुगंधी विक्रम/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



हम क्यों कमाते हैं?

हम क्यों कमाते हैं? हम अपने काम के साथ इतना घालमेल क्यों करते हैं ? हम 'परिवार के लिए', 'बच्चों के लिए', 'खुशी के लिए' आदि कारण बताकर औचित्य सा उत्तर दे देते हैं। यदि कारण 'बुनियादी जीवन के लिए' है, तो हमें इतना अधिक सौदेबाजी करने की आवश्यकता नहीं है कि हमारे आसपास किसी भी चीज के लिए हमारे पास समय न हो। लेकिन, अगर कारण उपर बताए गए तथ्यों के लिए है, तो यह सोचने का समय हो सकता है। हम कहते हैं कि हम परिवार, बच्चों आदि के लिए कमा रहे हैं। लेकिन क्या हमारे पास उन के साथ बिताने के लिए पर्याप्त समय है? मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने बच्चों के साथ उनके स्कूल, उनकी अन्य गतिविधियों में गुणवत्तापूर्ण समय बिताती थी, जिससे हमारे बीच एक अच्छी बॉन्डिंग विकसित हुई। लेकिन जैसा कि मैं अपने अन्य कार्यों के साथ समन्वय नहीं कर सकी, तो मैंने उन्हें अपने काम का प्रबंध करने के लिए स्वतंत्र कर दिया या उनकी देखभाल के लिए किसी अन्य स्रोत की व्यवस्था की जिससे वे मुझसे दूर हो गए। अब मैं फिर वही सवाल पूछती हूँ। मैं क्यों कमा रही हूँ ? अगर मैं दावा करती हूँ कि मैं अपने परिवार और अपने बच्चों के लिए कमा रही हूँ तो ऐसी कमाई का क्या फायदा जहां मेरे पास उनके साथ बिताने का समय ही नहीं है। क्या केवल यही कारण है कि हम परिवार को आराम प्रदान करने के लिए कमाते हैं जबकि हमें परिवार के साथ उस गुणवत्ता पूर्ण समय को बिताने का आराम कभी नहीं मिलता है? मुझे अभी तक अपनी कमाई के पीछे का कारण नहीं मिला है। आशा है आपको मिल गया हो।

मन की भाषा, प्रेम की भाषा
हिंदी है भारत जन की भाषा

हिंदी



श्रुति रामकुमार
श्री टी. के. रामकुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी की पुत्री



उम्र सिर्फ एक संख्या है- अचंता शरत कमल

2006 के मेलबर्न राष्ट्रमंडल खेलों में अचंता शरथ कमल दो स्वर्ण जीतने वाले पहले भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी बने। उन्होंने एक ऐतिहासिक एकल स्वर्ण भी जीता था। वह 24 साल का युवक था और उसके लंबे बाल थे और उसके सिर पर एक बंदना लिपटा हुआ था। वह फिट था और जीतने की तीव्र इच्छा रखता था। सोलह वर्ष बाद, बाल झड़ गए हैं और शांत और तेजतर्रार युवक ने शॉट्स और बचाव के अपने प्रदर्शनों की सूची और एक स्तर के सिर के लिए विशाल अनुभव जोड़ा है।

Sharath Kamal at 2006 CWG



Sharath Kamal at 2022 CWG

2022 बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में, अपने करियर के अंतिम पड़ाव में, शरथ कमल एक बार फिर शीर्ष पर अकेले खड़े थे - तीन स्वर्ण सहित चार पदक के साथ - एक ऐसा रिकॉर्ड जिसे ओवरहाल करने में कुछ समय लगेगा। 2022 के सीडब्ल्यूजी खेलों में, कमल ने इंग्लैंड के लियाम पिचफोर्ड के खिलाफ जीतकर पुरुष एकल में स्वर्ण पदक, श्रीजा अकुला के साथ मिश्रित युगल स्पर्धा और पुरुष टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीते।

उन्होंने प्रशिक्षण सत्र कभी नहीं छोड़ा। उम्र के साथ, रिफ्लेक्सिस कमजोर हो जाते हैं, इसलिए वह रिफ्लेक्सिस पर काम करता है। वह अपने शरीर पर काम करता है ताकि वह एक अतिरिक्त औंस न जोड़े। उनका मानना है कि जब तक वह प्रदर्शन करते हैं, उम्र सिर्फ एक संख्या है। 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में तीन दिनों की अवधि में 12 मैच खेलने से पता चला कि वह अभी भी शारीरिक और मानसिक रूप से फिट है। वह अपने सम्मान पर आराम नहीं करना चाहते हैं और 2024 में पेरिस में ओलंपिक खेलने के इच्छुक हैं।



सूरत, गुजरात में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिन्दी दिवस समारोह 2022 में भाग लेते हिन्दी अनुभाग के पदधारी

श्रुति रामकुमार
श्री टी. के. रामकुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की पुत्री



खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2021 में मेरा अनुभव

मैं टी.के रामकुमार की बेटी टी.आर श्रुति हूँ और यह खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2021 में कांस्य पदक जीतने की मेरी यात्रा है। चूंकि एमओपी वैष्णव, स्टेला मैरिस, एथिराज कॉलेज आदि मद्रास विश्वविद्यालय के अंतर्गत आते हैं, इसलिए पांच खिलाड़ियों के चयन के लिए एक मैच था। उपरोक्त कॉलेज जो मद्रास विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले, खेलो इंडिया गेम्स में खेलेंगे। मैं उस मैच में नंबर 1 के रूप में चयन हुई और मद्रास यूनिवर्सिटी टेबल टेनिस टीम के लिए एक कप्तान के रूप में चुनी गयी। यह मैच 5 दिनों के लिए बंगलोर में आयोजित किया गया था। कुल मिलाकर 16 विश्वविद्यालय थे, जिन्होंने इस खेल में भाग लिया। पहले एक ग्रुप स्टेज था और प्रत्येक ग्रुप से 2 टीमों को मुख्य राउंड के लिए चुना गया था। ग्रुप स्टेज में हमें राजस्थान, इलाहाबाद और उत्तर बंगाल के खिलाफ खेलना था। हमने सेट स्कोर में पहली दो टीमों के साथ आसानी से 3-0 से जीत हासिल की और आखिरी टीम को हराने के लिए थोड़ा संघर्ष करना पड़ा, भले ही यह समान सेट स्कोर था। हम अपने ग्रुप में पहले स्थान पर रहे और गुजरात के साथ क्वार्टर फाइनल खेलना था। उस मैच में हमने गुजरात को 3-1 के सेट स्कोर से जीत लिया था। हमें एसआरएम यूनिवर्सिटी, चेन्नई के साथ सेमीफाइनल खेलना था। भले ही हमने जीतने के लिए अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन हम उनसे 0-3 के सेट स्कोर से हार गए। चूंकि हम सेमीफाइनल में पहुंचे थे, इसलिए हमने उत्तर बंगाल की टीम के साथ कांस्य पदक हासिल किया। यह टूर्नामेंट मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था, क्योंकि एक कप्तान के रूप में खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में यह मेरा पहला मौका था। मुझे अपनी टीम का नेतृत्व करना था और मैंने इस अनुभव से बहुत कुछ सीखा। इसके अलावा, खेलो इंडिया गेम्स में भाग लेना अपने आप में एक बहुत बड़ा आशीर्वाद है क्योंकि आपको न केवल अपना खेल बल्कि, सभी खेल देखने को मिलते हैं। आप अन्य खिलाड़ियों को खेलते हुए देख पाएंगे और मुझे लगता है कि आप उनसे भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। इसलिए मुझे इस खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में भाग लेने में बहुत मजा आया और मुझे अगली बार गोल्ड मेडल जीतने की उम्मीद है।



आखिरकार आपकी
मेहनत रंग लाई,
आपको सफलता पर
ढेर सारी बधाई और
नए जिम्मेदारी,
चुनोतीयों के लिए ढेर
सारी शुभकामनाएं।



प्रवीण कुमार मीना/ डीईओ



जीवन में अनुशासन का महत्व

जीवन में अनुशासन का अर्थ है- व्यवस्था, क्रम एवं नियंत्रण। यह एक ऐसा गुण है, जो समय की बचत करता है। धन और शक्ति का अपव्यय रोकता है। बिना अनुशासन के कार्य कभी व्यवस्थित ढंग से नहीं हो सकता है।

“व्यर्थ कभी न बैठता, करता रहता काम।

अनुशासन से एक दिन, पा ले नया मुकाम” ॥

अनुशासन का मानव-जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। रसोईघर में काम करती हुई घरेलु महिला को लें। यदि उसके रसोईघर में हर वस्तु व्यवस्थित है तो उसका सब कार्य सरलता और सुलभता से हो जाएगा। परन्तु उसके रसोईघर में सामान व्यवस्थित नहीं है तो सारे काम देर से होंगे एवं मेहनत भी ज्यादा लगेगी। अव्यवस्था से परेशानी बढ़ेगी एवं समय भी बर्बाद होगा।

बस चढ़ने वाले यात्रियों का उदाहरण लें। अधिकांशतः बस चढ़ने वाले यात्रियों में धक्का-मुक्की होती है एवं कभी-कभी तो एकाध को खरोंच भी आ जाती है। परन्तु बस पर चढ़ने का काम क्रम से हो तो समस्या उत्पन्न नहीं होगी एवं सभी आराम से चढ़ भी जाएँगे। अब एक छात्र के मन की औच-पौच को देखें तो एक छात्र को एक ही समय में पढ़ना भी है, विवाह या किसी समारोह में भी जाना है, खेलना भी है, टेलीविजन पर आ रही फिल्म भी देखना है और परीक्षा की तैयारी भी करनी है। इस उलझन वाली मनःस्थिति में प्रायः छात्र लटक जाते हैं। वो सारे काम को करने को चक्कर में किसी भी कार्य में मन नहीं लगा पाते हैं। परन्तु कोई छात्र यदि अनुशासन प्रिय हो तो वह संयम रख सारे कार्यों के गुण-दोष पर विचार कर एवं समयबद्ध तरीके से खुद की मनःस्थिति पर काबू पा सकता है।

अनुशासन से एक मनुष्य का जीवन सहज, सरल तथा ऊर्जावान बनता है। अनुशासन से संयम आता है एवं एक अनुशासित मनुष्य ही सभ्य समाज का निर्माण कर सकता है। अतः एक सभ्य समाज के निर्माण में अनुशासन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान होता है और एक सभ्य समाज ही शक्तिशाली राज्य बन सकता है। अनुशासनविहीन राज्य कभी उन्नति नहीं कर सकता है।

हिन्दी अनुभाग के परिवार जनों द्वारा योगदान



सुश्री अन्नपूर्णी संजीव

सुश्री नव्या विजय



हिन्दी अनुभाग के परिवार जनों द्वारा योगदान



सुश्री नेहा साव गुप्ता/
सुश्री विजयेता साव गुप्ता/
कनिष्ठ अनुवादक की बहन



जुलाई 2022 के दौरान आयोजित 44 वें शतरंज ओलंपियाड को मनाने के लिए, यहां चॉक से बनाए गए शतरंज बोर्ड और शतरंज के सिक्कों (चाक के टुकड़े में नक्काशीदार) की एक तस्वीर है।

श्रीमती रामा रामस्वामी/
सलेपअ की पुत्री



गायत्री रामस्वामी

श्वेता कुशवाहा/ आशुलिपिक



चुप रहूँ या बोलूँ...

चुप रहूँ या बोलूँ...
कब कितना मुँह खोलूँ...
शब्दों को तराजू पर, कितना तोलूँ...
बोलूँ तो, अपने रूठ जायेंगे,

चुप रहूँ या बोलूँ...
चुप्पी कायरता थोड़ी है,
गलत है कुछ.. और आप चुप हैं,
ये इल्जामात थोड़ी है...
चुप रहूँ या बोलूँ...

रूठे कोई छूटे कोई,
सच पर चुप रहना,
ये जमीर की जज्बात थोड़ी है...
चुप रहूँ या बोलूँ...

समाज है, अच्छा सिखाता है,
कभी सच को झूठ, झूठ को सच बतलाता है...
तुम इनकी बुराइयों पर पर्दा डाल दो...
ये अक्सर ऐसे ही चुप रहना सिखाता है...
चुप रहूँ या बोलूँ...

कहो तुम भरी सभा में किसका पोल खोलूँ...
अरे जाने भी दो, लोग जान जायेंगे...
बोलो अब चुप रहूँ या बोलूँ.....

हिन्दी अनुभाग की तरफ से "अनुभव"



ॐ एस. सुधावल्ली/
हिंदी अधिकारी

कैसे- कैसे लोग हैं यार.....

शिक्षा का उच्चतम परिणाम सहनशीलता है। हेलेन केलर

लताजी की पड़ोसन की साँस हमेशा अपनी बहु के बारे में कुछ न कुछ शिकायतें लताजी से करती रहती थी। हर बार लताजी भी यही जवाब देती कि कब तक आप उसकी चुगली करती रहेंगी उसकी भी बहु है, पोता है...इस बूढ़ी उमर में भगवान का स्मरण कीजिए, सबको अपनी-अपनी जिन्दगी जीने दीजिए, इस पर वह बूढ़ी औरत बोलती कि ऐसे कैसे छोड़ें....आखिर हमारी अपनी संस्कृति है, परम्परा है, कुछ रीति रिवाज है.....

इसी प्रकार एक बार बूढ़ी शिकायत लेके आई। देखो लता, ये मेरी बहु है न....बड़ी अखड़ है, इतनी जिद्दी है...मेरे बेटे का मोहल्ले में नाक कटवा के ही छोड़ेगी.....बदनाम करा देगी....लता जी को कुछ समझ नहीं आ रहा था..वे बोली..अब क्या हुआ...तो इस पर बूढ़ी पड़ोसन बोली, क्या बताऊँ.....आज मुझे पता चला कि मार्केट जाकर इतनी देर से क्यों लौटती है...तुम्हें पता है, वह इस उमर में 12वीं परीक्षा देना चाहती है....खुद का पोता हो गया, पर शर्म की हद पार कर दी.....बाद में लताजी ने उस पड़ोसन की बहु से मिली और उसकी सास के बारे में कहा...तो इस पर वह बोली, दीदी, मेरे बेटे-बहु आफिस से सात-आठ बजे ही आते हैं...जब मेरी बहु,मेरे पोते के होम वर्क के लिए बैठती है, तो वह बेचारा सो जाता है, उसे जगा कर मार-मार कर सिखाती है...मुझे पढ़ने का बड़ा शौक है परन्तु कम उम्र में ही शादी हो गई, मैं 12 वीं लिख नहीं पाई और वह भी गाँव की पढ़ाई...सोचा कि यदि मैं कुछ अपने आपको समयानुसार अपडेट करूँ तो कम से कम मैं शाम के समय बच्चे को थोड़ा स्कूल के काम में सहायता करूँ। वे भी तो सारा दिन काम करके थके-मांदे आते हैं....उनका गुस्सा बच्चे पर उतारते हैं...उन्हें भी थोड़ा आराम मिलेगा..... यह सुनकर लताजी चौंक गई....क्या विचारधारा है.....सारा दिन यह भी तो घर में काम करती है...सास की ताने सुनती रहती है फिर भी इतनी सहनशीलता..तभी हेलेन केलर की एक बात याद आई, शिक्षा का उच्चतम परिणाम सहनशीलता है।

पृथ्वी हर आदमी की जरूरतों को
पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन
हर आदमी का लालच नहीं।

- महात्मा गांधी

www.hindimotive99.com

कुमार और उनकी पत्नी लता सामान लेने बाजार गए हुए थे जहाँ उन्होंने उनके चचेरे भाई और उसकी पत्नी को देखा...देखते ही पहचान लिया उनकी हालत ठीक नहीं है। चेहरा उतरा हुए था और दोनों उदास थे। देखते ही कुमार ने पूछा, क्या बात है, कुछ पेशान लग रहे हो, तबीयत ठीक है न....इस पर उनका चचेरा भाई अरुण बोला, नहीं भैया तबीयत सब ठीक है, कोरोना लॉकडाउन के बाद दुकान खोल नहीं पाया, सारा व्यापार चला गया, बच्चे-कुचे सामान बेचकर घर गृहस्थी का गुजारा कर रहा हूँ, बेटे की पढ़ाई भी रोक दी...यह सुनकर लताजी हैरान हो गई, तो उन्होंने कहा, वह तो ग्रेजुएशन के अखिरी साल में है न...किसी भी तरह से पढ़ाई पूरा करके उसे कहीं नौकरी में भेज सकते थे....इस पर अरुण ने कहा, नहीं भाभी फीस भरे नहीं, सो कॉलेज से निकाल दी....तुरन्त कुमार और लता ने आपस में कुछ बात किया और तुरन्त बच्चे के फीस भरने पैस दे दिए और कहा कि जितनी जल्दी हो सके उसे कॉलेज भेजो, पढ़ाई ही महत्वपूर्ण है। वे बड़े खुश हुए और चल दिए। कुछ ही दिनों में वे लोग आए और कहा कि भैया, हमारा व्यापार पार्टनर पुनः दुकान चलाने की बात करता है। यदि आप कोई पाँच लाख का बंदोबस्त करा दो तो मैं धीरे-धीरे चुका दूँगा और जिन्दगी भर आपका कृतज्ञ रहूँगा....यह सुनकर दोनों ने हफ्ते-भर का समय मांगा और कुछ भविष्य निधि से और कुछ गहने गिरवी रखके किसी भी तरह दे दिया। बड़ा खुश होकर पैसा लेके गया...व्यापार खूब बढ़ा....दूसरा दुकान खोल दिया.....बेटे को उसमें बिठा दिया...परन्तु रूपये वापस करने का नाम नहीं...जब भी वे रूपये मांगते तो उसकी पत्नी बोलती....आपका पैसा कहीं नहीं भागने वाला है...इतना भी क्या पैसों के पीछे पड़े हो.....कुछ समय ही तो मांगा है....अगली गली में एक घर बिकाऊ है...थोड़ा रकम कम पड़ रहा है, पहले ही मेरे पति परेशान है, ऊपर से आप हैं कि जब देखो..पैसा-पैसा.....आखिर आप भाई लोग किस काम के हैं....सुनकर दोनों हैरान हो गए। तभी उन्हें महात्मा गाँधी की उपरोक्त कथन याद आई।

'भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय'

लता और कुमार ट्रेन में सफर कर रहे थे। लगभग 18 घंटे का सफर था। सामने की बर्थ में 8 महीने के बच्चे के साथ उसके माँ- बाप आकर बैठे। जब से ट्रेन में चढ़े, बच्चा रोये जा रहा था। दोनों पति पत्नी परेशान हो रहे थे। बच्चा जब बाप के पास रहता तो थोड़ा रोना कम होता था, पर जब माँ के पास आता, बच्चा जोर-जोर से रोने लगता और कभी नहीं रुका। बच्चे का चेहरा लाल होता गया, उसकी माँ उसे दूध पिलाने की कोशिश कर रही थी, पर वह नहीं पी पाया। तो, लता जी ने उससे कहा, बेटा एक काम करो, बच्चा मुझे दो, और तुम जाकर कोई हलका सूती कपड़ा पहनकर आओ। वह गई, और एक हलका सूट पहनकर आई, बच्चे को पकड़ा, बच्चे ने दूध पिया और शांत होकर सो गया। तो लता जी ने कहा, "बेटा जब तक बच्चा थोड़ा बड़ा न हो जाएं, ऐसे किनारे वाली, जरी वाली, कुन्दन कारी जरदौसी कपड़ा मत पहनना, उसे यह सब चुभता है"। यह सुनकर उसका पति उसे डाँटने लगा और कहा कि "यही तो मेरी माँ ने निकलते वक्त कहा, यह कहाँ सुनी"। तुरन्त वह लड़की बोली, "आँटी अब आप खुश हो, पता नहीं कहाँ कहाँ से आ जाते हैं फ्री में ज्ञान बांटने।" यह सुनकर कुमार जी को गुस्सा आया और अपनी पत्नी से कहा, "भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय" इस लोकोक्ति का अर्थ है मूर्ख के सम्मुख ज्ञान की बातें करना व्यर्थ है।

. (इसमें उल्लिखित सभी पात्र पूर्णतः काल्पनिक हैं, परन्तु घटनाएं सच हैं...किसी को ठेस पहुँचाने का मकसद नहीं है)



सुश्री विजयेता साव गुप्ता/
कनिष्ठ अनुवादक



काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती

नई-नई नौकरी लगने के बाद जुही पहली बार अपने गृहनगर से दूर किसी दूसरे शहर गई थी। वहाँ के रहन-सहन, खान-पान, भाषा एवं वातावरण में ढलने में थोड़ी मुश्किलें भी हो रही थी। परन्तु मन में आत्मविश्वास के साथ वो इस वातावरण में ढल रही थी। उसके पड़ोस में एक परिवार रहता था जिसकी एक 12 साल की बेटी थी। उसका नाम साधना था। एक दिन साधना की माँ ने उसे साधना को पढ़ाने के लिए कहा। उसने भी निशुल्क पढ़ाने के लिए हामी भर दी। समय के अभाव के कारण वह उसे जब-जब समय मिलता तब-तब पढ़ाती। फिर वह एक सप्ताह के लिए अपने घर चली गई। जब वापस आई तो साधना को फिर से पढ़ने के लिए बुलाया। परन्तु साधना नहीं आई क्योंकि उसके माता-पिता ने मना कर दिया। जुही को भी यह बात समझ नहीं आई कि अचानक से क्या हो गया? वह बच्ची तो इतने चाव से यहाँ पढ़ रही थी। एक दिन शाम को जब वह घर वापस आई तो उसे सच्चाई का पता चला। उसके पड़ोस में एक और नया परिवार आकर रह रहा था, उसके घर में एक कॉलेज में पढ़ रही लड़की भी थी, वो लोग भी साधना को पसंद करते थे। तो साधना के माता-पिता को लगा कि क्यों न हमलोग इसे ही अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए बोले क्योंकि ये घर पर रहती हैं तो ज्यादा समय दे पाएंगी और दोनों माता-पिता उसे छोड़कर अपने-अपने काम पर भी जा सकेंगे। पर उनका यह क्षणभंगुर सपना ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाया क्योंकि वह लड़की कुछ दिनों के लिए अपने भाई के पास रहने आई थी कॉलेज खुलते ही अपने गृहनगर वापस चली गई। साधना के माता-पिता फिर से जुही के पास वापस आए परन्तु इस बार उसने पढ़ाने से मना कर दिया। उसे बुरा तो बहुत लगा क्योंकि इन सब में साधना की कोई गलती नहीं थी परन्तु उसके माता-पिता ने जो किया था उसके लिए सबक सिखाना भी जरूरी था। विद्या दान बहुत ही बड़ा दान है, उसमें अपने स्वार्थ के लिए छल-कपट करना गलत है एवं जो व्यक्ति यह दान कर रहा हो उसका अनादर करना और भी गलत है। जिस तरह काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती उसी तरह छल-कपट का व्यवहार बार-बार नहीं चलता।

श्री राहुल साव / कनिष्ठ अनुवादक



“सीख”

आशीष गुस्से में सब्जियों की थैली कुर्सी पर रखते हुए बोला- "दुनिया कहां-से-कहां चली गई है पर लोगों की सोच आज भी वहीं-की-वहीं है।"

क्या हुआ जी ! इतने गुस्से में क्यों हो? बाजार में किसी से लड़ाई हो गई क्या?

नहीं ! लड़ाई तो किसी से नहीं हुई है ।

“तो टमाटर की तरह लाल- पीले क्यों हो रहें हो? अब बताइए बाजार में क्या हुआ है? ”

क्या बोलूं मालती ! अभी बाजार से आ रहा था तो देखा, लड़कियों के साथ कुछ लड़के छेड़खानी कर रहे थे ।

आपने कुछ किया, ए...एक मिनट आपकी उनलोग के साथ लड़ाई हुई?

नही ! नहीं मालती ! वह तीनों लड़कियां बहुत ही बहादुर थी । आज दूसरों से उम्मीद करना ग़लत है इसलिए उन्होंने मदद की उम्मीद न करके खुद ही मामले को हल कर लिया और उन लड़कों को अच्छा सबक भी सिखाया ।

वाह! क्या बात है। काश हर लड़की ऐसा ही हौसला रखें । आशीष !

यह तो अच्छी बात है कि वो लड़कियाँ आत्मनिर्भर हैं । आप इतने गुस्से में क्यों हो?

हां.. मालती ! इस हिम्मत के लिए मैंने उनकी सराहना भी की । पर मेरा मुड उन लड़कियों के कारण नहीं लोगों के व्यवहार के कारण खराब हुआ । जब वो लड़कियां उन बदमाश लड़कों को सबक सीखा रही थी तो कुछ लोग भूत बनकर तमसा देख रहे थे तो कुछ वीडियो बनाने में लगे थे और तो और वे लोग उन लड़कों के बजाय उन्हीं लड़कियों को ही सुनाने लगे । कहने लगे-“पहले तो खुद ही छोटे-छोटे कपड़े पहन कर लड़को को उकसाती है और बाद में बेचारी बनती है ।” वे लड़कियां तो बिना कुछ बोले वहां से चली गई क्योंकि वो और तमाशा नहीं चाहती थी । पर मेरे से नहीं रहा गया और उनसे पूछा- ‘माना, इन्होंने छोटे कपड़े पहने थे पर ये लड़के तो उन्हें भी नहीं छेड़ते है जो आप लोगों के अनुसार सभ्य कपड़े पहनते हैं ।’ अगर इन लड़कियों की जगह आप में से किसी की बहन-बेटी होती तो भी ऐसे ही बोलते..? “....” सब मौन हो गए और अपने-अपने राह चले गए ।

आपने सही किया आशीष । ऐसे लोग ही उन लड़कों को बढ़ावा देते हैं । लड़कियों को सुनाने के बदले उन लड़को को दो-चार थप्पड़ लगाते तो दुबारा किसी लड़की को छेड़ने से पहले दस बार सोचते । लेकिन सब लड़कियों की ही गलतियां निकालते रहते हैं । बचपन से लड़कियों को ही सिखाया जाता है कि ऐसा करो, वैसा करो । सारे नियम -कानून लड़कियों के लिए ही बनाए जाते हैं । काश थोड़ा तमीज लड़कों भी सीखा देते तो आज हमारे समाज की स्थिति कुछ और होती ।

सही बोल रही हो मालती ! अगर हर माँ लड़कों को भी बचपन से सिखाए कि लड़कियों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए... तो बेटियों के घर आने में देर होने से किसी भी माँ की चिंता नहीं बढ़ेगी और न ही बिटिया रानी के रात को बाहर रहने पर किसी भी पिता की नींद नहीं उड़ेगी ।

राजभाषा गतिविधियाँ

भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों के अनुपालन में, हमारे कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु लगातार प्रयत्न किया जा रहा है। संपूर्ण वर्ष में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन हुआ। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सदस्यों ने सभी बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लिया और कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया। बैठक के कार्यवृत्त राजभाषा विभाग को एवं अनुपालन रिपोर्ट मुख्यालय को भेजे जा रहे हैं। नियमित रूप से तिमाही प्रगति रिपोर्ट राजभाषा विभाग को ऑनलाइन भेजी जा रही है। धारा (3) का शत प्रतिशत पालन किया जा रहा है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए केन्द्रीय सरकार कार्यालय (बृहत्-11) की कोटि में प्रेरणा पुरस्कार प्राप्त हुआ। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में इस कार्यालय के पदधारी नियमित रूप से भाग लेते आ रहे हैं तथा पुरस्कार भी प्राप्त करते हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों एवं राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित सम्मेलनों/ संगोष्ठी आदि में इस कार्यालय की उपस्थिति हमेशा रही है।



दिनांक 21 दिसंबर 2021 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजपत्रित एवं अराजपत्रित पदधारी कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेकर लाभान्वित हुए। कार्यशाला में भाग लेने वाले पदधारियों को सहायक सामग्री एवं कार्यालय निपुणता का वितरण किया गया। दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित किए गए। दिनांक 14.09.2021 को आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के दौरान प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए, माननीय गृह मंत्री का संदेश पढ़ा गया। प्रति तिमाही अभिमुखी कार्यक्रम के रूप में, एक लघु कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिसमें, तिमाही प्रगति रिपोर्ट में आने वाली शंकाओं का समाधान एवं हिन्दी कार्यान्वयन में प्रगति आदि पर जोर दिया जाता है।

अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक सेवानिवृत्त पदधारियों की सूची

नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
डी धनसेकरन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
पी. आर. मनोनमणी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति)
जी. संकरन	सहायक पर्यवेक्षक
ए. राजेन्द्रन	पर्यवेक्षक
एस. कस्तूरी रंगन	वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति)
डी. राजात्ती	एम टी एस
आर. तंगमणी	वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
डी. सुब्रमणियन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक पदोन्नत पदधारियों की सूची

नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
राम सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
एस. सतीस कुमार	सहायक पर्यवेक्षक

कल्याण गतिविधियाँ

क्रम सं	दिनांक	कार्य
1	20.05.2021	आतंकवादी विरोध दिवस
2	14.09.2021	हिन्दी दिवस
3	23.09.2021 एवं 24.09.2021	मुफ्त नेत्र शिबिर
4	08.03.2022	अंतर्राष्ट्रीय महीला दिवस, जिसमें कई प्रतियोगिताओं का आयोजन, कार्यक्रमों का आयोजन, पुरस्कार वितरण,
5	अप्रैल 2021 से मार्च 2022	कोविड-19 महामारी से पीड़ित पदधारी एवं परिव्राजनों की सहायता, वेक्सीनेशन शिविर, कबसुर कुडिनीर एवं टैम्पर्कॉल नीर का वितरण, ऑर्सनिक एल्बम-30 हामियोपथि गोलियों का वितरण
6	अप्रैल 2021 से मार्च 2022	सेवानिवृत्त पदधारियों हेतु विदाई समारोहों का आयोजन

खेल गतिविधियाँ

क्रम सं	खिलाड़ी का नाम	खेल का नाम
1	श्री एस एस. कण्णन, सहायक पर्यवेक्षक	बैडमिंटन
2	श्री आर मोहम्मद रेहान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	बैडमिंटन
3	बी. विजय राघवेन्द्रा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	फुटबॉल
4	श्री ए जॉक्सन दास, लेखापरीक्षक	फुटबॉल
5	श्री एस. मारीस्वरन, लेखापरीक्षक	हॉकी
6	श्री ए.एस. भास्करन, पर्यवेक्षक	हॉकी
7	श्री उपेन्द्र सिंह तँवर लेखापरीक्षक	हॉकी
8	श्रीमती डी. स्वर्णलता, सहायक पर्यवेक्षक	कैरम

हमारे कार्यालय के खिलाड़ी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खेलों में भाग लेकर/ कई खिताबें जीतकर कार्यालय का नाम रोशन किया है, जिसके लिए समस्त कार्यालय की तरु से हार्दिक बधाईयां एवं शुभकामनाएं

संगंध के नवम् अंक हेतु प्राप्त प्रशंसा पत्र



क्रम सं	नाम (श्री/श्रीमती)	कार्यालयों द्वारा प्रोत्साहित Appreciated by Offices
1	नयना विलास पाटील/ Nayana Vilas Patil	5
2	एस. वासुदेवन/ S. Vasudevan	4
3	एम.जानकी दिवाकरन/ M.Janaki Divakaran	3
4	राम सिंह/ Ram Singh	2
5	रोहित मिश्रा/ / Rohit Mishra	2
6	जे.पुष्कला/ J. Pushkala	2
7	वेदवल्ली कण्णन/ Vedavalli Kannan	1
8	ज्ञानाश्री दिब्येन्दु बेहेरा/ Jnanashree Dibyendu Behera	1
9	ब्रिगेश कुमार सुमन/ Brigesh Kumar Suman	1
10	प्रवीण कुमार मीना/ Praveen Kumar Meena	1
11	विरेन्द्र कुमार यादव/ Birendra Kumar Yadav	1

विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त प्रशंसा पत्र

क्रम.सं.	कार्यालयों के नाम जिनसे प्रशंसा पत्र की प्राप्ति हुई	पदधारियों के नाम	रचनाएँ
1.	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, झारखण्ड, राँची-834 002	-	-
2.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड कौलागढ़, देहरादून-248 195	-	-
3.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003	-	-
4.	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास), इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110 002	-	-
5.	कार्यालय, महालेखाकार (लेखा व हकदारी)- II, महाराष्ट्र, नागपुर-440 001	-	-
6.	प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना	-	-
7.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा-II सॉल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल-700 064	-	-
8.	महालेखाकार लेखापरीक्षा-II महाराष्ट्र, नागपुर-440 001	श्री एस. वासुदेवन श्रीमती एम.जानकी दिवाकरन श्रीमती नयना विलास पाटील	झील के किनारे खूबसूरती भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की अनिवार्यता
9.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा-I गवर्मेन्ट प्लेस, कोलकाता, पश्चिम बंगाल-700 001	श्रीमती नयना विलास पाटील श्रीमती एम.जानकी दिवाकरन	भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की अनिवार्यता खूबसूरती
10.	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड का कार्यालय, राँची-834 002	-	-
11.	प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, उत्तर खंड, भुवनेश्वर-751 017 (ओड़िशा)	श्री एस. वासुदेवन श्रीमती एम.जानकी दिवाकरन	झील के किनारे खूबसूरती
12.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़ - 160 020	श्रीमती वेदवल्ली कण्णन श्री एस. वासुदेवन श्री विरेन्द्र कुमार यादव श्री राम सिंह श्रीमती नयना विलास पाटील श्री रोहित मिश्रा श्री ब्रिगेश कुमार सुमन श्री प्रवीण कुमार मीना	मेरा भारत महान झील के किनारे आया सावन झूम के गुलाबी नगरी 'जयपुर' भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की अनिवार्यता स्वस्थ जीवन शैली के लिए योग एवं ध्यान कोरोना एक अभिशाप समय मूल्यवान है, लेकिन उससे अधिक सत्य मूल्यवान है।
13.	प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बंगलूरु - 560 001	श्री राम सिंह श्रीमती नयना विलास पाटील श्री रोहित मिश्रा	गुलाबी नगरी 'जयपुर' भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की अनिवार्यता स्वस्थ जीवन शैली के लिए योग एवं ध्यान
14.	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना-800 001	श्रीमती जे.पुष्कला श्री एस. वासुदेवन श्रीमती जे.पुष्कला श्रीमती नयना विलास पाटील श्री ज्ञानाश्री दिव्येन्दु बेहेरा	हिंदी भाषा का महत्व झील के किनारे मेरे अविस्मरणीय अनुभव भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की अनिवार्यता मेरे हीरो मेरे दादाजी

सुगंध 2022



महाबलिपुरम तट मंदिर के पास
तम्बी परिवार